Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor : 1.4152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 3 | November – 2016

उत्तरशती का यात्रा साहित्य

डॉ. विक्रम रामचंद्र पवार
देशभक्त संभाजीराव गरड महाविद्यालय मोहोळ.

प्रस्तावना :–

यात्रा याने एक जगह ठहरे रहने से पुरजोर इनकार। यात्रा याने नए परिवेश में प्रविष्ट होकर उस परिवेश के सकारात्मक रसों से अपने मन को सींचना। यात्राएँ जीवन समृद्ध करती हैं। यात्राएँ जिने का ढंग सीखाती हैं, नए दृष्टिकोण प्रदान करती हैं, ज्ञान के नव मार्ग खोलती हैं। यात्राओं ने भारत में कई बदलाव लाए। विदेशी आक्रांता यहाँ आए और लूटकर चले गए। कुछ यात्री विचारों का भंडार ले आए और भारतीयों में नव चेतना जगाकर चले गए। परंतु प्रत्येक यात्री एवं उनकी यात्रा का मूल्य समान नहीं है। सिकंदर की यात्रा से भी मानव जाति को कुछ–न–कुछ अवश्य मिला, परंतु महात्मा बुद्ध की यात्राओं में मानव को अपने स्वत्व का गौरव प्राप्त हुआ, जिसका मूल्य अधिक है।

यात्रा की कई दिशाएँ एवं उद्देश्य होते हैं। यात्री विभिन्न दृष्टिकोण सामने रखकर यात्रा पर निकलते हैं। देशाटन करते समय नए देशों में क्या देखा, क्या पाया, यह जितना देश पर निर्भर करता हैं, उतना ही देखने वाले के दृष्टिकोण पर भी। साहित्यिक मनोवृत्ति के यात्री के सामने कोई देश एक नक्शे सा बिछा रहता है। उसकी अनुभूतियों में समाया वह देश अपनी समग्र वास्तविकताओं के साथ यात्रा–ग्रंथ में प्राणवान प्रतिमा–सा सामने प्रकट होता है। पाठक उसके कण–कण को सुन सकते हैं, महसूस कर सकते हैं। अत: यात्रा–साहित्य यात्राकार के यात्रानुभवों का कलात्मक आविष्कार होता है। प्रकृति की विराटता, मानव–जीवन की संपूर्णता, विश्व संस्कृति की विविधता, वर्तमान जगत की गतिविधियों की विशिष्ठता का समग्र चिंतन 'यात्रा–साहित्य' की विषयवस्तु है।

हिंदी साहित्य में 'यात्रा–साहित्य' आज एक स्वतंत्र विधा के रूप में प्रतिष्ठित है। इसके तत्वों पर विचार करते हुए डॉ इरेश स्वामी, डॉ उषा यादव, डॉ ओमप्रकाश सिंघल और डॉ बापूराव देसाई ने जिन तत्वों को प्रस्तुत किया है, उन सब तत्वों का उचित अध्ययन करने पर यात्रा–साहित्य के निम्नांकित तत्व निर्धारित किए जा सकते हैं।

१. स्थानीयता २. तथ्यपरकता ३. यात्राकार की निजी विशेषताएँ ४. उद्देश्य ५. भाषा–शैली। 'स्थानीयता' से तात्पर्य स्थान विशेष के भौगोलिक–ऐतिहासिक परिवेश, प्राकृतिक सौंदर्य, सामाजिक स्थिति, सांस्कृतिक गतिविधियों के चित्रण से है। 'तथ्यपरकता' यात्रा–साहित्य का महत्वपूर्ण तत्व है। यात्रा–साहित्य में यात्राकार की सत्यानुभूतियों का ही यथार्थ अंकन किया जाता है। यात्राकार देखे एवं भोगे क्षणों को ही अपनी रचना में स्थान देता है। यात्रा–साहित्य में अनिवार्य रूप में यात्राकार की निजी विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं। यात्रा–साहित्य में यात्राकार एक वक्ता एवं भोक्ता रूप में आदि से अंत तक उपस्थित रहता है। अत: उसके व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू, स्पष्टत: रेखांकित किए जा सकते हैं।

'यात्रा–साहित्य' में मनोरंजन के अलावा समाज एवं संस्कृति का अध्ययन, पर्यावरण के प्रति जागृति, देश प्रेम की भावना जगना, विवध देशों की तुलना आदि उद्देश्य निहित हैं। 'यात्रा–साहित्य' में लेखक उन्मुक्त रूप में भाषा एवं शैली का प्रयोग करता है, क्योंकि न तो उसे किसी चरित्र के परिवेश का खयाल रखना होता है, न ही किसी काल का अनुसरण करना होता है। यह उसका मुक्त चिंतन है। अत: वह मुक्त रूप में शब्दों, मुहावरों का प्रयोग करता है। अपनी अभिव्यक्ति को विविध शैलियों के माध्यम से सशक्त रूप में प्रस्तुत करता है।

'यात्रा–साहित्य' को चार प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है। प्रथम प्रकार है 'यात्रा–मार्ग तथा यातायात साधन पर आधारित यात्रा–साहित्य'। इसके अंतर्गत पदयात्रा, स्थलमार्ग, जलमार्ग तथा आकाशमार्ग द्वारा संपन्न यात्राओं को रखा गया है। दूसरा प्रकार है 'विषय के अनुसार यात्रा–साहित्य'। इसके अंतर्गत पशु–पक्षियों से संबंधित तथा धार्मिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक एवं मनोरंजनात्मक यात्राओं को रखा गया है। तृतीय प्रकार है 'स्थानगत यात्रा–साहित्य'। इसके अंतर्गत स्वदेश, विदेश, देश–विदेश तथा विश्व यात्राओं को रखा गया है। चतुर्थ प्रकार है 'शैलीगत यात्रा–साहित्य'। इसके अंतर्गत कथात्मक, निबंधात्मक, रेखाचित्र एवं संस्मरणात्मक, डायरीनुमा, पत्रात्मक तथा पद्यात्मक शैली में रचित यात्राओं को रखा गया है।

यात्रा–साहित्य आज एक स्वतंत्र विधा है। अपने प्रारंभिक चरण में इसे निबंध या संस्मरण ही मान लिया जाता था। अत: प्रस्तुत शोध में यात्रा–साहित्य और अन्य गद्य विधाओं की पृथकता पर विचार किया गया है।

हिंदी के 'यात्रा–साहित्य' की एक विशाल परंपरा रही है। भारतेंदु पूर्व युग तथा भारतेंदु युग के अधिकांश 'यात्रा–ग्रंथ' निबंध या संस्मरणों के अंतर्गत समाविष्ठ किए गए हैं। फिर भी उनमें अगली पीढ़ी के यात्राकारों के लिए उचित दिशा निर्देश अवश्य ही मिल पाए हैं। भारतेंदु युग में पत्रिकाओं के प्रश्रय से विकसित 'यात्रा–साहित्य' द्विवेदी युग में पुष्ट हुआ। छायावादी आंदोलन के प्रभाव से उसने नए कलेवर ग्रहण किए। स्वतंत्रता के पश्चात नव–चेतना का प्रभाव ग्रहण कर यात्रा–साहित्य में विश्व जगत का समग्र चित्रण होने लगा। इस समय विश्व पर्यटन भी सुलभ हो गया था। उत्तरशती का युग वैज्ञानिक प्रगति युग है। अत: गतिशील यातायात साधनों के कारण जीवन भी गतिशील बन गया। इसका प्रभाव यात्रा–साहित्य में भी कई दृष्टियों से देखने को मिलता है। इस युग के यात्राकारों का सजग जनमानस उन्हें एक ओर प्रगत जगत के चित्र उतारने पर मजबूर करता है, तो दूसरी ओर समाज के पीछड़े वर्गों, गरीबी, अभाव के दर्द को महसूस करने को बाद्ध्य करता है। अत: उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में प्रकृति के सौंदर्य के साथ ही मानव–जीवन की तमाम विडंबनाएँ एवं विशेषताएँ मुखरित हुई हैं।

उत्तरशती के यात्रा–साहित्य का 'स्थानीयता' महत्वपूर्ण तत्व है। इसके अंतर्गत स्थान विशेष की प्रकृति का अत्यंत महत्व है। उत्तरशती के यात्राकारों ने प्राकृतिक उपादानों का चित्रण तन्मयता से किया है। इसमें पर्वतों का अनगढ़, सौंदर्य, मैदानों का आदिगंत विस्तार, जंगलों के घने वृक्ष, आकाश के चाँद–तारें, ऋतुओं का लावण्य, नदी का माधुर्य, समुद्र की अठखेलियाँ, झील की धीर–गंभीरता, झरनों का कल–कल निनाद आदि अपनी साज–सज्जा के साथ जिवंत रूप में उपस्थित होते हैं।

स्थानीय परिवेश के अंतर्गत स्थान विशेष का भौगोलिक एवं ऐतिहासिक परिवेश अपनी समग्र वास्तविकताओं के साथ साकार हुआ है। सांस्कृतिक परिवेश में उत्सव, प्रथा–परंपरा, दंतकथा, लोकगीत एवं कलाओं का यथार्थ परिचय मिल पाता है। उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में विभिन्न धर्मों की धार्मिक–सांस्कृतिक संकल्पनाओं का भी मार्मिक अंकन हुआ है। इसमें हिंदू धर्म के विविध मंदिर, पूजा–विधान, तीर्थ तथा अन्य विधि–विधानों की प्रमुखता है।

उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में विश्व के विभिन्न देशों के समाज जीवन का यथार्थ परिचय मिलता है। इसमें विश्व समाज के जाति एवं वंशगत स्थिति, खान–पान एवं रहन–सहन पद्धतियाँ, नारी की स्थिति, आवासगत रूचियाँ, आतिथ्यशीलता का पूर्ण परिचय मिलता है। इसमें राहगिरों का स्वभाव चित्रण तथा ऐतिहासिक व्यक्तियों के चरित्र चित्रण की प्रधानता है। उत्तरशती के यात्राकारों ने विदेशियों की भारत विषयक धारणाओं को भी जानने का प्रयास किया है। इसी प्रकार विदेशों में बसे भारतीयों की स्थिति एवं मानसिकता तथा अपने स्वदेश के प्रति का दृष्टिकोण भी अभिव्यक्त हुआ है।

उत्तरशती के यात्राकारों ने विश्व भर में चल रही साहित्यिक गतिविधियों एवं साहित्यकारों की चिंतन पद्धति तथा प्रभावग्रहणता की ओर विशेष रूचि दिखाई है। पत्र–पत्रिकाओं के वर्तमान स्तर पर भी उनका ध्यान विशेष रूप से गया है। विश्वस्तर पर हिंदी भाषा की स्थिति क्या है, यह जानने की कोशिश भी यहाँ की गई है।

यात्रा–साहित्य में तथ्यात्मकता को अत्यंत महत्व है। इसमें गढत पात्रों एवं स्वनिर्मित स्थितियों को कोई स्थान नहीं है। यहाँ केवल यात्राकार के अनुभूत क्षणों को ही साहित्यिक गरीमा के साथ अभिव्यक्त किया जाता है। उत्तरशती के यात्राकारों ने अपने यथार्थ अनुभूतियों को मार्मिक रूप में प्रस्तुत किया है। यात्राकारों ने कई बार ऐतिहासिक संदर्भों को प्रस्तुत करते समय पाद्टिप्पणियों का सहारा लेकर उनके सत्य प्रमाणों को निर्देशित किया है।

यात्रा–साहित्य के तत्वों में 'यात्रा–साहित्य : यात्राकार की निजी विशेषताएँ' को भी एक तत्व के रूप में ग्रहण किया गया है। क्योंकि अन्य विधाओं की अपेक्षा यात्रा–साहित्य में लेखक के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलुओं का स्पष्ट अंकन होता है। यात्राकार अपनी यात्रानुभूतियों को ही साहित्यिक गरीमा के साथ अभिव्यक्त करता है। अपनी रचना में यात्राकार स्वयं वक्ता एवं भोक्ता रूप में आदि से अंत तक उपस्थित रहता है। अत: उस रचना में उसके चरित्र के विभिन्न पहलू अनिवार्य रूप में अंकित होते हैं। जैसे उसकी आत्मीयता, पैनी दृष्टि, वैयक्तिकता, आध्यात्मिकता एवं सौंदर्यात्मकता।

यात्राकार प्रकृति, समाज, संस्कृति आदि में से जिस बिंदू की ओर आत्मीय लगाव अनुभूत करता है, उसी के अवलोकन पर उसकी दृष्टि टिकी रहती है। उत्तरशती के यात्राकारों का मन प्राकृतिक उपादानों के चित्रण में विशेष रूप में रमा है। उन्होंने गरीबों, निरीह बच्चों एवं अविकसित अँचलवासियों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त की है। ऐतिहासिक, धार्मिक स्थलों की दुरावस्था उन्हें सलती है। सह यात्रियों के बिछूडने का दर्द उनके हृदय के कोमल पक्ष को उद्घाटित करता है। अत: उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में यात्राकार की आत्मीयता का यथार्थ परिचय मिलता है।

उत्तरशती के यात्राकारों ने अपनी वैयक्तिक रूचि–अरूचियों को भी अभिव्यक्त किया है। स्थान विशेष का समाज, संस्कृति को अभिव्यक्त करते समय वहाँ की गलत एवं विडंबनापूर्ण स्थितियों को वे लक्ष्य करते हैं। कई बार वे कुछ सुझाव या अपनी वैयक्तिक टिप्पणियाँ भी जोड़ते जाते हैं। किन्हीं स्थितियों या समस्याओं को अभिव्यक्त करते समय उसकी आवश्यकता, अनावश्यकता को लेकर कई प्रश्न उपस्थित करते हैं। अत: उत्तरशती के यात्राकारों की वैयक्तिकता विभिन्न दृष्टियों से अभिव्यक्त हुई है।

उत्तरशती का यात्राकार केवल तटस्थ दर्शक मात्र नहीं है। अत: यात्रा के मध्य उसकी पैनी दृष्टि से समाज–संस्कृति, राजनीति आदि के विरोधाभास चूक नहीं पाते। वह समाज में फैली अप्रवृत्तियों, धार्मिक स्थानों पर पनपते स्वार्थ, राजनीतिक धांधलियों को मार्मिक रूप में अभिव्यक्त करते हैं। यह उनके जागृत जनमानस का ही प्रमाण कहा जा सकता है।

उत्तरशती के यात्रा–साहित्य में यात्राकारों की अध्यात्मिक प्रवृत्ति का परिचय भी मिलता है। यात्राकारों ने भारतीय अध्यात्मिक चिंतन की विभिन्न संकल्पनाओं का विस्तृत विवेचन किया है। साथ ही उन्होंने स्वयं की अध्यात्मिक मान्यताओं को भी स्पष्ट रूप में अभिव्यक्त किया है।

उत्तरशती के यात्राकारों ने प्रकृति के कण–कण में सौंदर्य को अनुभूत किया है और सार्थक शब्दों में उसके यथार्थ चित्र भी उतारे हैं। प्रकृति सौंदर्य में ईश्वर की सत्ता का आभास पाते हैं।

यात्रा–साहित्य मनोरंजन के धरातल से उठकर अनेकों उद्देश्यों का भी वहन करता चलता है। इसी प्रकार उत्तरशती का यात्रा–साहित्य मनोरंजन के अलावा अन्य कई उद्देश्यों की आपूर्ति करता है। जैसे दो देशों की तुलना करना, इसमें समाज, संस्कृति, प्रगति, राजनीति जैसे बिंदूओं के आधार पर दो या अधिक देशों की तुलना की गई है। अधिकांशत: यात्राकारों ने विदेशों के साथ भारत की तुलना करते हुए, देश की प्रगति के लिए आवश्यक तत्वों एवं प्रयासों की ओर ध्यान आकृष्ठ किया है।

'मानव–जीवन का विस्तृत बोध' कराना भी उत्तरशती के यात्राकारों का उद्देश्य है। वे मानव की दुर्दम्य इच्छाशक्ति का परिचय कराते हैं। विभिन्न देश एवं संस्कृतियों में पले मनुष्यों की मूल भावनाओं में समानताएँ खोजते हैं। अत्यधिक तकनीकीकरण एवं आधुनिक जीवनयापन साधनों से ऊबे हुए मनुष्य को

सामान्य स्तर का जीवन जिते हुए या आनंदोपभोग करते हुए देखते हैं। वृद्धों की असहाय जिंदगी के वास्तव से रूबरू कराते हैं। असामाजिक कार्यों में लिप्त स्वार्थांध लोगों की कुटिलता पर प्रहार करते हैं।

धार्मिक–सांस्कृतिक बोध कराना भी उत्तरशती के यात्राकारों का उद्देश्य है। इन्होंने पाप के विरेचन हेतु गंगा–स्नान या तीर्थ–यात्रा का प्रयोजन आवश्यक माननेवाले भारतीयों की प्रवृत्ति पर भाष्य किया है। वे मंदिरों आदि धार्मिक स्थलों पर पनप रहे लूट–खसोट, अंधविश्वास आदि का विरोध कर उनकी आवश्यकता पर ही प्रश्न चिह्न लगाते हैं। धर्म एवं संस्कृति की प्रासंगिकता की ओर ध्यान आकृष्ट करते हैं। आज हर स्तर पर हो रहे संस्कृति के अवमूल्यन की स्थितियों को प्रस्तुत करते हैं।

उत्तरशती के यात्राकारों ने वैश्विक समस्याओं की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया है। एक तरफ प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है, तो दूसरी ओर दवाईयों में मिलावट जैसे प्रश्न मानव जीवन को स्वस्त कर रहे हैं। अत्यधिक तकनीकीकरण ने मानव समाज के सम्मुख कई समस्याएँ खड़ी की हैं। तकनीकीकरण की इस अंध दौड ने विश्व को फिर एक बार विश्वयुद्धों की कगार पर लाकर खड़ा कर दिया है। यात्राकार प्रगत तंत्रज्ञान का प्रयोग विश्वकल्याण हेतु करने का पक्षधर है।

उत्तरशती का यात्राकार पर्यावरण संरक्षण हेतु अत्यंत सजग है। अत: वह पर्यावरणीय समस्याओं की ओर विशेष रूप में ध्यान आकृष्ट करता है। वह प्रदूषण की वैश्विक समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए, विविध प्रदूषण के मानव एवं जीवसृष्टि पर पड रहे विघातक परिणामों को सामने रखकर, पर्यावरण संरक्षण हेतु आवश्यक प्रयासों पर विचार करता है।

यात्राकार विश्वभ्रमण के मध्य अपने देशप्रेम का बार–बार परिचय देता है। इसी प्रकार यात्रा के मध्य वह विभिन्न लोगों के संपर्क में आने पर उसे उनका देश–प्रेम एवं राष्ट्रनिष्ठा की भावनाएँ ज्ञात होती हैं। जैसे कश्मीर जैसे अस्थिर प्रदेश में राष्ट्रीय सुरक्षा बल के जवानों का देशप्रेम अपने आप में एक मिसाल है। इसी प्रकार की राष्ट्रनिष्ठा अलग–अलग प्रसंगों में विविध देशों के नागरिकों में भी देखने को मिलती है।

उत्तरशती का यात्राकार वर्तमान जीवन पद्धती को सुखकर बनाने हेतु इतिहास से बोध लेने की आवश्यकता पर बल देता है। विश्व में हिटलर जैसे आततायी फिर से न पनपे इसके लिए मानव–समाज को सजग रहने की सलाह देता है। यात्राकारों ने ऐतिहासिक चरित्रों के कार्यों एवं व्यक्तित्व आदि के प्रति आज के समाजमन पर क्या प्रभाव, अभिमत हैं, यह जानने का भी प्रयास किया है।

यहाँ उत्तरशती के यात्रा–साहित्य की भाषा–शैली पर विचार किया गया है। इसमें भारत के विभिन्न प्रदेशों तथा विविध देशों की भाषाओं के शब्दों का परिचय मिलता है। यात्राकारों ने मुहावरें तथा कहावतों का यथोचित प्रयोग भी किया है। इसमें विविध विषयों से संबंधित सूक्तियों का भी मार्मिक प्रयोग हुआ है।

शैली के अंतर्गत वर्णनात्मक शैली के माध्यम से प्राकृतिक उपादानों एवं विभिन्न स्थितियों का मार्मिक अंकन किया गया है। काव्यात्मक शैली में उद्दीप्त भावनाओं को प्रस्तुत किया है। समाज, संस्कृतिगत दोषों पर व्यंग्यात्मक शैली के माध्यम से प्रहार किया गया है। गाईड शैली के माध्यम से विविध स्थानों का पूर्ण परिचय दिया गया है। संवाद शैली के माध्यम से विभिन्न व्यक्तियों की मानसिकता एवं भाषा–बोली का यथार्थ परिचय दिया गया है। चित्रात्मक शैली के माध्यम से प्रकृति के मनोरम चित्र उतारे गए हैं।

संदर्भ ग्रंथ

यात्राचक्र	धर्मवीर भारती
सागर पार का संसार	शशिप्रभा शास्त्री
कहीं सुबह कहीं शाम	शंकर दयाल सिंह
हिमालय के प्रांगण में	स्वामी सच्चिदानंद
नये चीन में दस दिन	गिरधर राठी
पत्थर और पानी	नेत्रसिंह रावत
कश्मीर रात के बाद	कमलेश्वर
महादेश की दुनिया	प्रदीप पंत
पड़ोस की खुशबू	रामदरश मिश्र